दार्जिलिंग की सैर

(लेख)

14

अजय सिलीगुड़ी में रहता था। उसके पापा डॉक्टर होने के कारण बहुत व्यस्त रहते थे। अतः वे अजय को छुट्टियों में कहीं घुमाने भी नहीं ले जा पाते थे। पिछले वर्ष अजय के अध्यापक उसकी कक्षा को टूर पर काजीरंगा लेकर गए थे। लेकिन अजय नहीं जा पाया था। आज कक्षा में अध्यापकजी ने बच्चों को दार्जिलिंग के टूर के बारे में सूचित किया। इच्छुक विद्यार्थियों को अपना नाम नियत राशि के साथ जमा करने के लिए एक सप्ताह का समय भी दिया। 'टूर' शब्द अजय के लिए रोमांच भरा और जिज्ञासावाला था। अतः इस बार अजय ने सोच लिया था कि वह भी स्कूल के अन्य छात्रों के साथ टूर पर दार्जिलिंग जरूर जाएगा। परंतु समस्या यह थी कि पापा से दार्जिलिंग जाने की बात कैसे कहे। शाम को क्लीनिक से आकर पापा चाय पीने लगे। अजय ने सोचा कि बात करने का यही उचित समय है। वह आकर धीरे से बोला–

"पापा! पापा! आप मना तो नहीं करेंगे?"

"बेटा किस बात के लिए?"

"पापा, हमारी कक्षा के बच्चे टूर पर दार्जिलिंग जा रहे हैं। मैं भी टूर पर जाना चाहता हूँ।"

"ठीक है सोचूँगा। कितने बच्चे जा रहे हैं?"

"पापा! कक्षा के अधिकतर बच्चे जा रहे हैं। प्लीज, मुझे भी जाने दीजिएगा।"

थोड़ी देर तक अजय के पापा सोचते रहे फिर उन्होंने अजय को आज्ञा दे दी।

बस, फिर तो अजय ने तुरंत ही अपने मित्रों को फोन कर दिया। अगले दिन उसने स्कूल में पहुँचते ही सर को टूर पर जाने की राशि दे

दी और बेसब्री से टूर पर जाने के दिन का इंतजार करने लगा।

आज खुशी के मारे अजय का चेहरा फूल-सा खिल रहा था, क्योंकि अगले दिन सुबह ही उसे बस से जाना था। अजय के साथ सभी बच्चे दार्जिलिंग जैसा खूबसूरत पहाड़ियों का शहर देखने के लिए उत्साहित थे। अजय की मम्मी ने कुछ गरम कपड़े भी अटैची में रख दिए। साथ में कुछ नाश्ते का सामान बिस्कुट, दालमोठ, मठरी और लड्डू भी रख दिए। खाने का सामान देखकर तो अजय फूला नहीं समाया। टूर पर जाने के उत्साह के कारण अजय सुबह जल्दी-जल्दी उठकर तैयार हो गया। वह अटैची लेकर पापा के पास जाकर खड़ा हो गया और पापा का हाथ पकड़कर प्यार से बोला- "पापा प्लीज, मुझे स्कूल छोड़ आइए। अगर देर हो गई तब मैं यहीं रह जाऊँगा।"

अपने बेटे की *उत्सुकता* और चाहत को देखकर अजय के पापा उसे तुरंत स्कूल छोड़ने के लिए चल दिए। रास्ते-भर अजय के पापा उसे समझाते रहे कि बेटा ज्यादा शैतानी मत करना, टीचर के साथ रहना, उनका कहना मानना, पहाड़ों की ज्यादा ऊँचाई पर चढ़कर नीचे मत झाँकना, गरम कपड़े पहने रहना और अकेले मत घूमना।

अपने पापा की हर बात पर अजय 'हाँ' कहता रहा। बस, इसी तरह बातों ही बातों में स्कूल आ गया।

स्कूल पहुँचकर अजय ने देखा कि बस तैयार खड़ी थी। सर कुछ बच्चों के साथ बस में बैठे हुए थे। कार से उतरकर अजय पहली बार साथियों के साथ टूर पर जा रहा था।

सर ने सब बच्चों को कुछ बातें सावधानी बरतने के लिए समझाईं। फिर बच्चों को खाने के लिए मठरी एवं मीठे बिस्कुट छोटी-छोटी थैलियों में डालकर दिए। खाने के बाद गानों का कार्यक्रम चला। किसी ने गीत, किसी ने कविता, किसी ने गाजल सुनाई।

इसी तरह बस का सफर चलता रहा। सर बच्चों का मनोरंजन करवाते रहे। बस मैदान पार करके कब पहाड़ों पर आ गई, पता ही नहीं चला। इसका पता तब लगा जब बस दार्जिलिंग की टेढ़ी-मेढ़ी पहाड़ी सड़कों पर लहराती, बलखाती चल रही थी।

रास्ते में सीढ़ीदार खेत दिखाई दे रहे थे। ऐसे हरे-भरे खेत देखकर बच्चे उछल पड़े और सब एक साथ बोले– "सर, ये हरे-भरे सीढ़ियों जैसे खेत किसके हैं?" "बच्चों, ये चाय के बागान हैं?" "क्या! चाय के और वे भी हरे-भरे!!" "हाँ बच्चों, ये सब चाय के बागान हैं।"

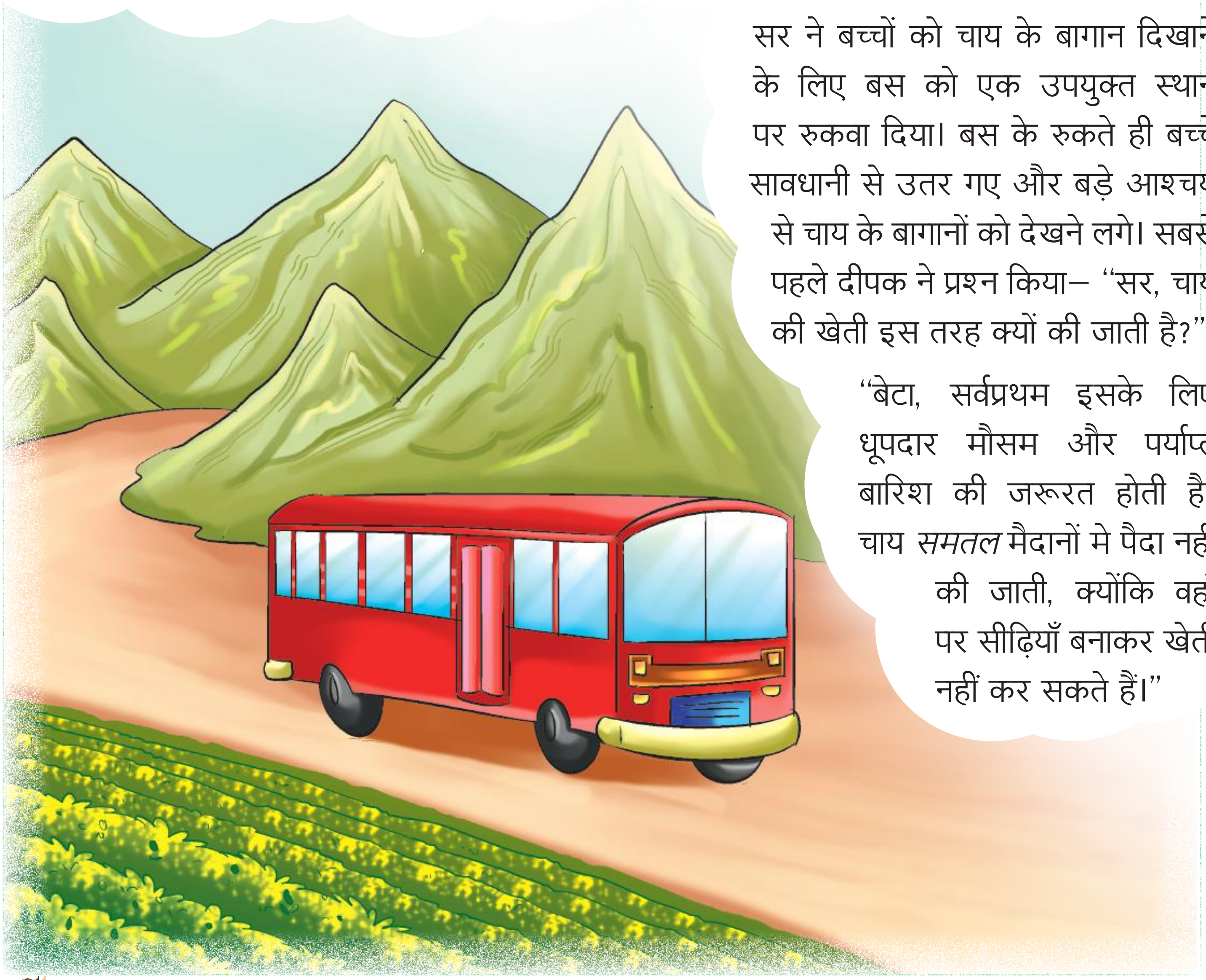

सर ने बच्चों को चाय के बागान दिखाने के लिए बस को एक उपयुक्त स्थान पर रुकवा दिया। बस के रुकते ही बच्चे सावधानी से उतर गए और बड़े आश्चर्य से चाय के बागानों को देखने लगे। सबसे पहले दीपक ने प्रश्न किया– "सर, चाय की खेती इस तरह क्यों की जाती है?"

"बेटा, सर्वप्रथम इसके लिए धूपदार मौसम और पर्याप्त बारिश की जरूरत होती है। चाय *समतल* मैदानों मे पैदा नहीं की जाती, क्योंकि वहाँ पर सीढ़ियाँ बनाकर खेती नहीं कर सकते हैं।"

"सर, सीढ़ियाँ क्यों बनाते हैं?"– एक साथ कई बच्चों ने पूछा।

"बच्चों, चाय के ऐसे पौधे बीजों से तैयार किए जाते हैं। जब पौधा बड़ा हो जाता है, तब उसे सीढ़ीदार या ढलानदार खेतों में *रोपा* जाता है क्योंकि चाय के पौधों की जड़ों को ठहरे हुए पानी से बचाया जा सकता है।"

"सर , यह बात तो समझ में आ गई, लेकिन एक और आश्चर्य की बात है कि इन चाय की पत्तियों को केवल महिलाएँ ही तोड़ रही हैं। यहाँ कोई पुरुष क्यों नहीं हैं?"– अजय बोला।

"हाँ बच्चों, यह खास बात है कि पुरुष इन पत्तियों को नहीं तोड़ते क्योंकि चाय की पत्तियाँ *नरम* होती हैं और पुरुषों के हाथ *सख्त* बस, इसलिए औरतें और लड़कियाँ ही चाय की पत्तियाँ तोड़ती हैं। चाय के पौधे 1.5 मीटर से लंबे नहीं जाते हैं। जानते हो, क्यों? क्योंकि इनकी पत्तियों को तोड़ना फिर मुश्किल हो जाएगा।"

बीच में ही शरद बोला– "सर, यह पत्तियाँ साल में कितनी बार तोड़ी जाती हैं?"

"साल में तीन बार चाय की पत्तियों की चुनाई होती है– बरसात, गरमी और शरद ऋतु में। अच्छा बच्चों, अब होटल चलते हैं जहाँ पर हम लोगों को ठहरना है। वहाँ भोजन करके आप सब सो जाना। फिर सुबह घूमने भी तो जाना है।"

"अच्छा सर"– कहकर सभी बच्चे बस में बैठ गए।

दार्जिलिंग का मौसम उन्हें बहुत अच्छा लग रहा था। वहाँ की ठंडी-ठंडी हवा का वे खूब आनंद ले रहे थे।

लहराती, बलखाती, ऊँची-नीची सड़कों पर चलती हुई बस शीघ्र ही होटल पहुँच गई। सब बच्चे बस से उतरे और अपना सामान लेकर अपने-अपने कमरों में चले गए।

उनके कमरों में टी.वी. भी रखे थे जिन्हें चालू करके उन्होंने कुछ देर अपने मनपसंद कार्यक्रम देखे। उसी समय सर अजय के कमरे में आए और बोले– "कल हम लोग एक फैक्ट्री जाएँगे जहाँ चाय तैयार होती है।"

"हाँ सर, हम लोग आपसे पूछने ही वाले थे कि यह पत्तियाँ तो हरी होती हैं लेकिन *प्रयोग* होने वाली चाय प्रायः काले या भूरे रंग की होती है। ऐसा क्यों होता है?"–अजय बोला।

"वही तो कल हम लोग फैक्ट्री जाकर देखेंगे!"

"अच्छा सर"– कहकर थके हुए बच्चे शीघ्र ही खाना खाकर सो गए। सुबह दस बजे तक सभी बच्चे स्नान करके तैयार हो गए और नाश्ता करके सर के साथ चाय की फैक्ट्री देखने चल दिए।

जब वे फैक्ट्री पहुँचे तो वहाँ चाय की पत्तियाँ सुखाई जा रही थीं। कहीं सूखी पत्तियों पर खमीर उठाने के लिए पानी का छींटा दिया जा रहा था तो कहीं सूखी मुरझाई तैयार पत्तियाँ छानी जा रही थीं। वहाँ बड़ी चाय और छोटी चाय अलग-अलग तैयार हो रही थीं। अंत में तैयार चाय मशीनों द्वारा डिब्बों में भरी जा रही थीं। डिब्बों में भरने से पहले एक जगह सूखी पत्तियों पर बेलन घुमाया जा रहा था। इससे पत्तियों का एक समान आकार हो रहा था।

यह सब देखकर बच्चे बहुत खुश हुए। फिर अजय ने सर से कहा– "सर, अब हमने यह तो जान लिया कि चाय कैसे तैयार होती है। अब हम दार्जिलिंग में क्या देखेंगे?"

अजय की बात सुनकर सर खूब जोर से हँसे और बोले– "कल सुबह हम सब टाइगर हिल जाएँगे, जहाँ से *सूर्योदय* के समय पूरी हिमालय की पर्वत *शृंखला* दिखाई देती है।"

सब बच्चे फिर होटल पहुँचने के लिए खुशी-खुशी बस में बैठ गए।

–निर्मला सिंह

शब्द-अर्थ

जिज्ञासा वाला — जानने की इच्छा *(curiosity)*, उत्सुकता — प्रबल इच्छा, बेचैनी *(eagerness)*, समतल — बराबर, चौरस *(flat)*, रोपना — लगाना *(transplant)*, नरम — मुलायम *(soft)*, प्रयोग — इस्तेमाल *(used)*, सूर्योदय — सूर्य का निकलना *(sunrise)*, शृंखला — कतार, पंक्ति *(series)*।

अभ्यास

मौखिक

1. इन शब्दों को पढ़कर सुनाइए–

सिलीगुड़ी	व्यस्त	छुट्टियों	काजीरंगा	दार्जिलिंग	कार्यक्रम
इच्छुक	सप्ताह	उत्साहित	सीढ़ीदार	उपयुक्त	शृंखला

2. निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–

(क) अजय की कक्षा टूर पर कहाँ जा रही थी?

(ख) बस में बच्चों को खाने के लिए क्या दिया गया?

(ग) चाय के पौधे कितने लंबे होते हैं?

(घ) अंत में चाय डिब्बों में कैसे भरी जा रही थी?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए–

(क) अजय कहाँ रहता था?

☐ सिलीगुड़ी में ☐ काजीरंगा में ☐ दार्जिलिंग में

(ख) अजय के पापा क्या थे?

☐ इंजीनियर ☐ डॉक्टर ☐ व्यापारी

(ग) चाय की पत्तियाँ साल में कितनी बार तोड़ी जाती हैं?

☐ तीन ☐ दो ☐ चार

2. वाक्यों को पूरा कीजिए–

दार्जिलिंग, उत्सुकता, पर्वत श्रृंखला, व्यस्त, जिज्ञासावाला

(क) अजय के पापा डॉक्टर होने के कारण बहुत .... थे।

(ख) 'टूर' शब्द अजय के लिए .... था।

(ग) अपने बेटे की .... देखकर उसके पापा उसे स्कूल छोड़ने के लिए चल दिए।

(घ) अजय का टूर .... जा रहा था।

(ङ) 'टाइगर हिल' से हिमालय की .... दिखाई देती हैं।

3. सही वाक्यों के सामने (✓) तथा गलत के सामने (✗) का निशान लगाइए–

(क) अजय के पापा पुलिस कमिश्नर थे। ☐

(ख) अजय अपने पापा से बात करने के लिए डर रहा था। ☐

(ग) अजय 'टूर' पर दार्जिलिंग जाना चाहता था। ☐

(घ) अजय उत्साह के कारण सुबह देर से उठा। ☐

(ङ) 'टाइगर हिल' जगह काजीरंगा में स्थित है। ☐

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) अजय के पापा छुट्टियों में उसे घुमाने क्यों नहीं ले जा पाते थे?

(ख) अजय में उत्साह क्यों झलक रहा था?

(ग) चाय की खेती के लिए कैसे मौसम की आवश्यकता होती है?

(घ) चाय की पत्तियों को केवल महिलाएँ ही क्यों तोड़ती हैं?

(ङ) चाय की खेती सीढ़ीदार या ढलाईदार खेतों में ही क्यों की जाती है?

भाषा-ज्ञान

1. नीचे दिए गए वाक्यों में कोष्ठक से सही शब्द चुनकर लिखिए—

(क) अजय ने सोचा .... बात करने का यही उचित समय है। (कि/और)

(ख) अजय का चेहरा फूल-सा खिल रहा था .... अगले दिन सुबह ही उसे बस से जाना था। (क्योंकि/परंतु)

(ग) ठंडी हवा .... चमचमाती धूप में बच्चे खूब आनंद ले रहे थे। (अन्यथा/और)

(घ) पिछले साल अजय के सर टूर लेकर काजीरंगा गए थे .... अजय नहीं जा पाया था। (लेकिन/और)

2. नीचे दिए गए शब्दों के लिंग बदलिए—

स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
(क) महिला	पुरुष	(ख) सेठ	....
(ग) लड़की	....	(घ) युवक	....
(ङ) मालिन	....	(च) सम्राट	....
(छ) अभिनेत्री	....	(ज) विद्वान	....
(झ) कवयित्री	....	(ञ) बादशाह	....

3. नीचे दिए गए द्वित्व व्यंजनों से तीन-तीन शब्द बनाइए—

(क) ड्ड =	लड्डू	गुड्डा	गड्डी
(ख) म्म =	....	....	....
(ग) च्च =	....	....	....

(घ) त्त = ...

(ङ) ब्ब = ...

4. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए–

(क) 'उत्सुकता' शब्द में कौन-सा प्रत्यय है?

☐ कता ☐ आ ☐ ता

(ख) 'फूला नहीं समाना'–इस मुहावरे का क्या अर्थ है?

☐ फूल जाना ☐ बहुत दु:खी होना ☐ बहुत खुश होना

5. प्रत्येक पंक्ति में किस शब्द की वर्तनी गलत है?

(क) ☐ उपयुक्त ☐ जरूरत ☐ सर्वप्रथम

(ख) ☐ श्रृंखला ☐ कार्यक्रम ☐ सूर्योदय

(ग) ☐ शीघ्र ☐ आश्चर्य ☐ जहां

6. नीचे दिए गए वाक्यों में उचित सर्वनाम अथवा क्रिया शब्दों का सही रूप में प्रयोग करके वाक्य पूरे कीजिए–

(क) मुझे .... कार खरीदनी है। (मैं)

(ख) उसने एक चित्र .... है। (बना)

(ग) .... कल से बीमार है। (उसे)

(घ) .... पुस्तक खो गई। (मुझे)

(ङ) बीमार व्यक्ति .... है। (सोना)

7. पाठ से दो युग्म शब्द-ढूँढ़कर उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए–

(क) ....

(ख) ....

क्रियात्मक गतिविधि

- अपने मित्र को पत्र या ई-मेल लिखकर अपनी किसी यात्रा के बारे में बताइए।
- दार्जिलिंग के विषय में इंटरनेट से जानकारी एकत्रित करके सचित्र परियोजना तैयार कीजिए।
- मित्र के साथ किसी पहाड़ी यात्रा की योजना बनाते हुए संवाद लिखिए।